संतुलित पशुआहार का दुग्ध उत्पादन में महत्व

पशु पालन विभाग

हिमाचल प्रदेश, शिमला-5

टोल- फ्री दूरभाष (1800-180-8006)

संतुलित पशुआहार का दुग्ध उत्पादन में महत्व

दुग्ध संघों द्वारा उत्पादित पशुदाना एक संतुलित आहार है, इसमें पशुओं के लिये आवश्यक सभी पोशक तत्व उचित अनुपात में मौजूद होते हैं। पशु दाने के निर्माण में उत्तम गुणवत्ता के अनाज, तेल खली, ग्वारमील, भूसी, शीरा, नमक, खनिज लवण तथा विटामिनों का प्रयोग किया जाता है। यह मंहगा नहीं होता और पशु इसे चाव से खाते हैं।

– प्रोटीन, ऊर्जा, खनिज और विटामिन से भरपूर पशुआहर से जानवर स्वस्थ रहते हैं, उनका विकास अच्छा होता है। गर्भ में पल रहे बच्चे के समुचित विकास के लिये भी पशु को इसे खिलाना लाभप्रद होता है।

– यह प्रजनन शक्ति बढ़ाता है और दूध उत्पादन व फैट में भी वृद्धि करता है। बछड़े बछियों को 1 से 1.5 किलो संतुलित पशुआहार प्रतिदिन देना चाहिये। दुधारू पशुओं को स्वस्थ रखने के लिये 2 किलो पशुआहार और प्रति लीटर उत्पादित दूध के लिये गाय को 400 ग्राम तथा भैंस को 500 ग्राम संतुलित पशुआहार खिलाना चाहिये।

ब्याने वाली गायों और भैंसों को 1 किलो पशुआहार तथा 1 किलो अच्छी गुणवत्ता की खली, गर्भावस्था के अंतिम 2 महीने में अतिरिक्त देना चाहिये।

प्रति दिन 6 लीटर दूध देने वाली गाय के लिए →	2.5 किलो ग्राम पशुआहार(दूध के लिए)	+ 2 किलो (स्वस्थ रहने के लिए)	=4.5किलो प्रतिदिन की आवश्यकता होती है
प्रति दिन 6 लीटर दूध देने वाली भैंस के लिए →	3 किलो ग्राम पशुआहार(दूध के लिए)	+ 2 किलो (स्वस्थ रहने के लिए)	=5 किलो प्रतिदिन की आवश्यकता होती है
गर्भावस्था के अंतिम दो माह में गाय /भैंस के लिए →	1 किलो संतुलित पशुआहार + 1 किलो खली	+ 2 किलो (स्वस्थ रहने के लिए)	=3 किलो प्रतिदिन संतुलित पशुआहार + 1 किलो खली की आवश्यकता होती है

पशुओं को आहार देने के नियम

सामान्यतः एक व्यस्क जानवर को प्रतिदिन 6 किलो सूखा चारा और 15–20 किलो तक हरा चारा खिलाना चाहिये। फलीदार **(Legume)** और बिना फलीदार **(Non-legume)**हरे चारे को निश्चित अनुपात में मिलाकर खिलाना चाहिये। हरे चारे की फसल

को जब आधी फसल में फूल आ जाए तब काटकर खिलाना उपयुक्त होता है। अतिरिक्त हरे चारे को सुखाकर या गड्ढ़े में दबाकर साइलेज बनाना चाहिये। इस तरह से संरक्षित चारे का उपयोग गर्मियों में या हरे चारे की कमी के समय लाभदायी होता है। पशुओं को स्वस्थ रखने व उनके उत्पादन में वृद्धि के लिए संतुलित पशुआहार, बाइपास प्रोटीन भी खिलाना चाहिये। पशुओं को प्रतिदिन अच्छी गुणवत्ता का खनिज मिश्रण **(Mineral Mixture)** देना चाहिये क्योंकि शरीर की आंतरिक क्रियाओं को सुचारू रूप से चलाने के लिये खनिज तत्व अनिवार्य होते हैं। पशुओं का आहार अचानक न बदल कर धीरे–धीरे बदलना चाहिये। चारे को काटकर खिलाना लाभदायक है। सूखा चारा, हरा चारा, पशुआहार व खनिज मिश्रण मिलाकर (सानी बनाकर) एक बार न देकर, प्रतिदिन 3–4 बार में बांटकर देना उपयुक्त होता है। सानी बनाने से चारे की बरबादी कम होती है और चारा सुपाच्य हो जाता है जिससे पशु का दूध उत्पादन बढ़ता है।

पशुओं को स्वस्थ रखने तथा उनका दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के लिए हरा चारा अति आवश्यक है। पशु इसे चाव से खाते है और आसानी से पचाते हैं। हरे चारे का दुग्ध उत्पादन में महत्व पशुओं को स्वस्थ रखने तथा उनका दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के लिए है। हरे चारे में वांछित विटामिन–ए और खनिज अधिक मात्रा में होते हैं जो पशु की प्रजनन शक्ति के लिये महत्वपूर्ण है, इससे पशु समय से गर्मी में आता है और दो ब्यांतों के बीच का अंतर भी कम हो जाता है। कम जमीन व कमजोर आर्थिक स्थिति के कारण किसान नकद पैसा देने वाली फसलों पर ज्यादा ध्यान देते हैं फिर भी निम्न पद्धति अपनाकर हम चारा उत्पादन बढ़ा सकते हैं।

पद्धतियां

- सिंचित क्षेत्रों में जब दो फसलों के बीच खेत खाली हो, कम समय में तैयार होने वाली चारा फसलों को उगाना।
- ज्यादा घास उत्पादन के लिए फसलों की चारे वाली प्रजाति को उगाना।
- उत्तम गुणवत्ता वाले बीजों का प्रयोग करना।
- खराब भूमि को सुधार कर उपयुक्त चारे की फसलों को उगाना।
- गांव की सामूहिक ज़मीन पर बहुवर्षीय घास एवं चारे वाले वृक्षों को लगाना

\

- गांव की सामूहिक जमीन पर बहुवर्शीय घास (जैसे नेपियर, सिटेरिया) एवं चारे वाले वृक्षों (बान रोबिनिया,खिड़क, ल्यूसिनिया) को लगाना।
- खेत में छूटी हुई जगह में, छांह में पनपने वाली घास या चारा उगाना
- घर के पिछवाड़े गंदे पानी के निकास के स्थान पर एक से ज्यादाकटान देने वाली बहुवर्षीय घास लगाना (जैसे पैराग्रामस, संक नैपियर, नैपियर)।